भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव साआनंद संपन्न

इन्दौर

इन्दौर । भगवान आदिनाथ जन्मोत्सव से भगवान महावीर जन्मोत्सव तक हर वर्ष की तरह प्रतिदिन होने वाले घर घर मंगलाचार की कड़ी में इस वर्ष भी भजनों के रुप में भक्ति रस की अनवरत गंगा बहती रही । इन्दौर के अनेक मंदिरों में पिछले कुछ वर्षों से यह भजन श्रृखंला चलती आ रही है । इस वर्ष भी विजय नगर के श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर में प्रतिदिन महिलाओं ने सामूहिक रुप से भजन संध्या का आयोजन किया। इस कड़ी में स्कीम नं. 74 से भक्ताम्बर मंडल की महिलाओं ने भजनों के साथ ही पहली बार नृत्य गीतों की विशेष प्रस्तुति दी । बहुत कम तैयारी के बावजूद भी महिलाओं ने भगवान महावीर के जन्मोत्सव की बधाई की सुंदर और उत्साहपूर्ण प्रस्तुति दी जिसे उपस्थित महिलाओं ने भरपूर तालियों के साथ सराहा और अनुमोदना की । नृत्य में कल्पना बागो, कल्पना अजित, नेहा जैन, सविता जैन, कल्पना जैन, सुशीला काला, आभा सिंघई और अनुपमा जैन ने भाग लिया । गोलालारीय समाज के स्तुति महिला मंडल द्वारा आयोजित मासिक बैठक में भी महावीर जन्मोत्सव के पालना गीत गाये गये । विजय नगर मंदिर में "एक शाम महावीर के नाम" कार्यक्रम के अंतर्गत महावीर जन्म कल्याणक से संबंधित शानदार नृत्य नाटिका का मंचन किया गया । इसमें भगवान महावीर के गर्भ एवं जन्म कल्याणक के साथ ही पूर्व भव की झलकियां दिखाई गई । सर्वार्थसिद्धि से प्रभु का माता के गर्भ में आगमन, माता त्रिशला के सोलह स्वप्न, राजा सिद्धार्थ द्वारा स्वप्नों का फल बताना, देवलोक से इन्द्रों का धरती पर आगमन, अष्टकुमारियों द्वारा माता की सेवा, 15 माह तक कुबेर द्वारा रत्न वृष्टि, भगवान का जन्म, इन्द्रों द्वारा शिशु वर्धमान का पांडुक शिला पर सहस्र कलशों द्वारा जन्माभिषेक और प्रभु को पालना झुलाने आदि समस्त क्रियाएं जीवंत रुप से मंचित की गई । साधान मदावत के निर्देशन में महिला मंडल की सभी महिलाओं ने कार्यक्रम में पूर्ण उत्साह के साथ मनमोहक प्रस्तुति दी, जिसे उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि से सराहा । अगले दिन महावीर जन्मोत्सव का मुख्य आयोजन भगवान की शोभायात्रा के रुप में मनाया गया । नगर के सभी मंदिरों से आयोजित श्रीजी की शोभायात्रा पुन: स्थानीय मंदिरजी में कलशाभिषेक के साथ संपन्न हुई । दोपहर में राजबाड़ा पर पराम्परागत विशाल शोभा यात्रा बड़े हर्षोल्लासपूर्व निकाली गयी जिसमें अनेक कालोनियों के मंदिरों व सोशल ग्रुपों द्वारा मनमोहक, शिक्षाप्रद झांकियां प्रदर्शित की गई थी, जिसे देखने के लिए हजारों की संख्या में शोभायात्रा पथ पर श्रावकगण मौजूद थे ।

जैन पाठशाला क्यों आवश्यक हैं ?

निर्णय आप स्वयं ही करे ? पूण्य कर्म का उदय कहो या हमारे से जो बड़े बुजुर्ग है उनका उपकार कहो की आज लगभग सब जगह पर जिनेन्द्र देव के दर्शन सुलभ हैं सभी क्षेत्र के गाँव में जैन मंदिर उपलब्ध हैं वो बात और हैं कि ज्यादातर लोग फिर भी नित्य देवदर्शन तक नहीं करते आप हँस रहे हैं कही आप भी उनमें शामिल तो नही ? दोष उनका नहीं हैं । शायद उनको जैन पाठशाला जाने का सौभाग्य नहीं मिला हो तो उन्हें अपने महान धर्म का महत्व ही नहीं पता चल पाया देखिये महानुभवो आप बड़ा सा स्कूल बना दीजिये अस्पताल बना दीजिये पर जैसे स्कूल का महत्व विद्यार्थियों ओर शिक्षक के बिना और अस्पताल का डॉ. के बिना कोई महत्व नहीं हैं चाहे भवन फिर कितना भी भव्य हो ठीक उसी तरह हम बड़े बड़े मंदिर तो बहुत बना रहे हैं बनाने भी चाहिए पर अगर जैन शिक्षा पर जोर नहीं दिया तो वो समय भी दूर नहीं जब मंदिर तो होंगे पर भक्त गायब हो जायेंगे बच्चों को पाठशाला भेजे ये भविष्य के लिए अति आवश्यक हैं । वर्तमान युग में आधुनिक पढ़ाई के कारण अभिभावक बच्चों को धर्म की शिक्षा देने में कतराते है जिसके कारण बच्चें अपने जैन धर्म व उनकी परम्पराओं से दूर होते जा रहे है । पढ़ाई पश्चात बच्चे अच्छी नौकरी या व्यवसाय में जाते है तो उनके मन में अपने धर्म के प्रति इतना श्रद्धा भाव नहीं रहता है । बस वे नाममात्र को ही दर्शन के लिए मंदिरजी में जाते है । तो सोचें हमने जिनेन्द्र देव को मंदिरजी में तो धूम धाम से विराजमान कर दिया परंतु बच्चों को धार्मिक संस्कार देना भूल गये । अतः बात के मर्म को समझे और निर्णय लेवे कि अपने क्षेत्र में पठशाला का गठन कर बच्चों को धर्म की शिक्षा प्रदान करें । समाज के श्रेष्ठीजन इसमें विशेष रूचि रखें, गर्मी के अवकाश में विशेष शिविर लगाकर बच्चों में धर्म के प्रति रुचि जागृत करने का प्रयास करें ।

* विनम्र श्रद्धांजली *

* स्व. श्री हुकुमचंदजी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती **कमलाबाई जैन** का देवलोकगमन दि. 16 मार्च 18 को इन्दौर में हो गया । आप धार्मिक एवं सरल स्वभाव की महिला थी ।

* **श्री शिशुपाल जैन** (टेलीफोन) का देवलोकगमन दि. 16 मार्च 18 को इन्दौर में हो गया । आप सरल हृदय व्यक्तित्व के धनी थे ।

* स्व. श्री शांतिलालजी जैन के छोटे पुत्र **श्री जिनेन्द्रकुमार जैन** का देवलोकगमन 03 अप्रैल 18 को इन्दौर में हो गया । आप स्पष्टवादी एवं सरल हृदय स्वभाव के व्यक्तित्व थे । आपकी स्मृति में परिजनों ने गोलालारीय न्यास इन्दौर को 5100/- एवं गोलालारीय दर्शन को 2100/- की धनराशि दान स्वरुप प्रदान की है ।

* **श्रीमती गेंदाबाई** धर्मपत्नी स्व. श्री शांतकुमारजी जैन का देवलोकगमन 4 अप्रैल 18 को जैतावारा, सतना में हो गया । आप अत्यंत सरल स्वभाव व धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी ।

गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि ।

नोट - विधिवत जानकारी प्राप्त होने पर ही शोक संदेश का सचित्र प्रकाशन किया जावेगा ।

सोनागिर में सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न

अनुपमा जैन, इन्दौर । सिद्धक्षेत्र सोनागिर की पावन भूमि पर गत दिनों सिद्धों की आराधना का सहयोग बना । स्व. श्री लालचंदजी जैन नीमवाले, ललितपुर की धर्मपत्नी श्रीमती शशिप्रभा जो स्वयं प्रतिमाधारी श्राविका है और सोनागिर में रहकर धर्मसाधना कर अपने श्रावक जीवन को चरितार्थ कर रही है । असीम पुण्यार्जन की भावना से उन्होंने सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया । इस महा विधान की मंडल रचना सोनागिर के तलहटी में स्थित 1008 श्री नेमीनाथ मंदिर पर की गई । प्रथम दिवस घटयात्रा निकाली गयी जिसमें बड़ी संख्या में बाहर से पधारे तीर्थयात्रियों के साथ स्थानीय श्रद्धालुओं ने भी पूरे उत्साह के साथ शोभायात्रा में भाग लिया। शोभा यात्रा मुख्य मंदिर से प्रारंभ होते हुए त्यागीव्रती आश्रम पहुंची जहां 108 श्री विवेकसागरजी महाराज को श्रीफल भेंट किया गया । शोभा यात्रा के समापन पर मंदिरजी में ध्वजारोहण, सकलीकरण, पात्र चयन आदि क्रियाएं संपन्न हुई । विधान के दौरान प्रतिदिन अभिषेक, शांतिधारा व नित्य नियम पूजन के पश्चात विधान की संगीतमय पूजा की गयी एवं अंतिम दिन विश्वशांति महायज्ञ विधान का समापन हुआ । विधानाचार्य पं. श्री चक्रेशजी बलदेवगढ़ के निर्देशन में सभी क्रियाएं विधिवत संपन्न की गयी । श्री वीरेन्द्रजी इटावा की संगीत मंडली के संयोजन में सुमधुर गीतों एवं भजनों की स्वरलहरियों ने धार्मिक आनंद को दुगुना कर दिया । विधान के बीच संगीत व नृत्य की प्रस्तुतियां श्रावकों द्वारा की गयी । संध्या के समय संगीतमय आरती व भजन पश्चात पं. राहुलजी जैन झांसी द्वारा शास्त्र प्रवचन का लाभ श्रावकों ने लिया । विधान के बीच क्षेत्र पर विराजित 108 श्री मेरुभूषण महाराज और आर्यिक 105 श्री कीर्तिमती माताजी का सानिध्य भी प्राप्त हुआ । सिद्धचक्र विधान में नीमवाले परिवार के सभी सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी । इसके अतिरिक्त झांसी, ललितपुर, नागपुर, सागर, पन्ना, ग्वालियर, गंज बासौदा, छतरपुर, विदिशा, इन्दौर से भी अनेक परिजन व सगे संबंधियों ने विधान में उपस्थित होकर धर्मलाभ लिया । विधान समापन के अवसर पर श्रीमती शशिप्रभा व उनके माामजी सुगनचंद्र बडेरा वालों ने अपनी ओर से मंदिरजी के जीर्णोद्धार व मंदिरजी के दोनों ओर एक-एक वेदी के निर्माण हेतु दानराशि की घोषणा की । जिसका उपस्थित श्रावकों ने करतल ध्वनि से अनुमोदना की ।

आपके परिवार या नगर में धार्मिक/सामाजिक गतिविधियों की जानकारी प्रकाशित करने के लिए आप सचित्र जानकारी हमारे वाट्सएप्प नं. 9406744064 या हमारे ईमेल पर देवें ताकि जानकारी को समुचित स्थान प्रदान किया जा सके ।

जिन चैत्यालय में दो नवीन प्रतिमाएं विराजमान

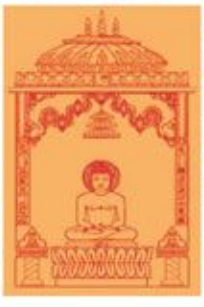

भोपाल के महावीर मेडिकल कॉलेज MIMS का जैन मंदिर परिसर भक्तिरस के रंग में रंगा दिखाई दे रहा था। अवसर था मंदिर की वेदी पर होने वाले भव्य प्रतिमा विराजमान समारोह का दोपहर 2 बजे जैसे ही अतिशय क्षेत्र पानीगांव में प्रतिष्ठित 1008 संभवनाथ एवं 1008 पार्श्वनाथ भगवान की मनोहारी प्रतिमाओ को मंदिर परिसर में लाया गया सारा प्रांगण जय जयकारों से गूंज उठा । 25 एकड़ में फैले अस्पताल एवं कॉलेज के विशाल परिसर की फेरी लगाती हुई शोभायात्रा मंदिर के द्वारा पर पहुँची, जहाँ शोभायात्रा की भव्य अगवानी की गई। बाल ब्रह्मचारी सुमत भैयाजी एवं अनिल भैयाजी द्वारा धार्मिक मंत्रोञ्चार के साथ अभिषेक शांतिधारा के पश्चात् नवीन प्रतिमाओं को वेदी पर विराजमान करवाया।

वेदी पर अब तीन प्रतिमाएं मूलनायक 1008 भगवान महावीर स्वामी के साथ ही अब असंभव को संभव करने वाले 1008 संभवनाथ भगवान एवं विघ्नहर्ता सुखकर्ता 1008 पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रतिमाओ को विराजमान करने का सौभाग्य श्री नवलचंदजी किशोर कुमारजी डॉ. राजेश कुमार जैन परिवार को प्राप्त हुआ।